

MBH. 14, 156. KĀM. NĪTIS. 12, 34. — Vgl. दीर्घ°.
 सत्त्विय adj. zum Sattva gehörig u. s. w.: दीना AIT. BR. 4, 26. Feuer TBR. 3, 11, 9, 2. PAÑĀV. BR. 11, 1, 1. KĪTH. 34, 11. — Vgl. सत्त्व.
 सत्त्वभूत (सत्त्व + भूत) adj. Andere speisend MBH. 13, 4873. भूतानामा-
 च्छादनवद्वक्तः NILAK.
 सत्त्वोत्थान (सत्त्व + उ°) n. das Aufstehen (Auseinandergehen) vom
 Sattva ÇAT. BR. 4, 6, 9, 6. 10. 15. KĪTJ. ÇR. 12, 4, 30.
 सत्त्व्यं adj. = सत्त्विय ÇAT. BR. 11, 3, 3, 2.
 सत्त्वं (von सत्त्), am Ende eines adj. comp. f. झ। 1) n. das Sein, Exi-
 stenz, Realität HALĀJ. 5, 82. VAIĠ. bei MALLIN. zu KIR. 12, 40. स्मो व्य-
 मित्वाकृतात्मनमेव सत्त्वं गमयति TS. 2, 5, 9, 5. 5, 2, 1, 6. 4, 9, 5. NRS. TĀP.
 UP. in Ind. St. 9, 162. सर्वत्र WEBER, RĀMAT. UP. 287. Z. d. d. m. G. 7,
 294. NILAK. 12. 21. 52. 121. COMM. zu ĠAIM. 1, 31. zu KAP. 1, 4. अस्ति
 सत्त्वे AK. 3, 3, 19. H. 1541. SARVADARĠANAS. 9, 9. fgg. 12, 21. 14, 7. 141, 15.
 अ° 12, 21. 14, 11. NRS. TĀP. UP. in Ind. St. 9, 162. NILAK. 164. SĀH. D.
 269. Z. d. d. m. G. 7, 294. — 2) n. Wesen, Charakter: पुत्रस्य पुत्रः स-
 त्त्वमसुते PAÑĀV. BR. 15, 12, 2. सत्त्वानुत्रया सर्वस्य अद्वा भवति BHAG. 17, 3.
 Spr. (II) 4753. क्रियासिद्धिः सत्त्वे वसति मरुतो नोपकरणे 8712 = 6145.
 सर्वः कृच्छ्रगता अपि वाञ्छति जनः सत्त्वानुत्रयं फलम् 7322. 7420. KIR. 12,
 40. VARĀH. BRH. S. 68, 114. नाभिः स्वरः सत्त्वमिति प्रदिष्टं गम्भीरमेतन्नित्यं
 नराणाम् 85. SUÇR. 1, 124, 12. अदीन° adj. MBH. 3, 11909. 15599. R. 2,
 72, 53. 4, 29, 25. अभिनन्द्य° adj. RAGH. 5, 31. आर्य°, उदार° adj. MBH.
 2, 2366. उच्छृङ्खल, शास्त्रनियमित Spr. (II) 369. उन्नत 6560. ऊर्जित° adj.
 6541. मनुबुद्धि° adj. MBH. 15, 672. कल्याणसत्त्वता R. 2, 44, 14. क्रूर° adj.
 PRAB. 115, 11. तीव्र°, मन्द° adj. KATHĀS. 33, 75. fg. ८७° adj. 67. 88, 49.
 धीर° 33, 63. लघु° adj. VARĀH. BRH. 15, 13. °लाघव R. 4, 6, 6. विप्रुद्ध-
 सत्त्वविज्ञान adj. R. 4, 22, 12. प्रुद्ध° adj. 2, 38, 29. स्थिर° adj. R. SCHL. 2,
 83, 8. सिंरु°, व्याघ्र°, वराकृमृग°, जल° adj. MBH. 13, 2155. VARĀH. BRH.
 S. 68, 108. 111. fgg. PRAB. 113, 16. अन्नःसत्त्व eines Rubins Spr. (II) 867.
 सत्त्व = स्वभाव H. an. 2, 540. MED. v. 28. VAIĠ. a. a. O. = आत्मभाव H.
 an. = आत्मत्व MED. — 3) n. ein fester Charakter, Festigkeit, Entschlos-
 senheit, Energie, Muth BHAG. 10, 36. R. 2, 21, 38. KĀM. NĪTIS. 1, 16. fg. 4, 6.
 29. 43. 68. 5, 13. 13, 2. 19, 62. SUÇR. 1, 130, 2. तुल्यसत्त्वानां सिंरुणाम् RAGH.
 4, 72. Spr. (II) 646. 2781, v. l. 3161. 3302. 4387. 4465. 7504. KATHĀS.
 18, 196. 283. 389 (doppelsinnig). सत्त्वमनुधावति संपदः 27, 134. 208. 35,
 43. 53, 143. 66, 109. RĀĠA-TAR. 3, 53. 4, 65. 5, 131. SĀH. D. 197. सततं स-
 त्त्वमास्थितः MBH. 12, 4257. धारयन्सत्त्वम् R. 2, 22, 2. सत्त्वमाश्रित्य केवलम्
 3, 40, 18. अवालसत्त्वे बालः ÇĀK. 101, 21. आपद्यपि त्याज्यं न सत्त्वम् KA-
 THĀS. 21, 100. सत्त्वावसाद 18, 309. सत्त्वोत्कर्ष HIT. 100, 6. संपन्नः सत्त्वसंपदा
 AK. 3, 1, 13. °संपन्न JĀĠN. 1, 308. R. 2, 78, 2. 101, 17. °युक्त VARĀH. BRH.
 S. 5, 39. सत्त्वान्वित DHŪRTAS. 77, 2. सत्त्वोद्दिक्त RĀĠA-TAR. 3, 343. सत्त्वधिक
 Spr. (II) 1431. KATHĀS. 27, 134 (कर्मन्). VER. in LA. (II) 29, 1. 2. सत्त्वाद्य
 KATHĀS. 12, 44 (doppelsinnig). 38, 2. रूपसत्त्वगुणोपेत M. 3, 40. °वीर्यगुणो-
 पेत R. 1, 6, 22. °बुद्ध्युपपन्न Spr. (II) 6711. सत्त्वाभिन्नसंपन्न 6712. सत्त्वो-
 त्साकृष्टित HIT. 30, 2. विक्रीनाः सत्त्वेन VARĀH. BRH. S. 27, 8. क्रीन° adj.
 R. 5, 13, 69. SUÇR. 2, 474, 16. KATHĀS. 27, 69. 43, 88. विक्रीन° adj. VARĀH. BRH.
 S. 16, 32. उत्तम°, मध्यम° adj. SUÇR. 2, 226, 12. fg. KATHĀS. 15, 117. अल्प°
 adj. 25, 98. सत्त्व = व्यवसाय AK. 3, 4, 27, 215. H. an. MED. VAIĠ. = स्था-

मन् HALĀJ. = बल H. an. MED. VAIĠ. = पराक्रम VAIĠ. — 4) n. das
 absolut gute Wesen, die erste der drei Qualitäten (गुण) der Prakṛti
 AK. 1, 1, 4, 7. H. an. MED. HALĀJ. NIR. 14, 3. MAITAJUP. 4, 3. 5, 2. M. 12,
 24. सत्त्वं ज्ञानम् 26. तत्र यत्प्रीतिसंयुक्तं किंचिदात्मनि लक्षयेत् । प्रशात्त-
 मिव प्रुद्धमं सत्त्वं तदुपधारयेत् ॥ 27. 37. सत्त्वस्य लक्षणं धर्मः 38. °युक्त
 JĀĠN. 3, 159. SĀMĠKĠJAK. 13. 54. WEBER, RĀMAT. UP. 324. TATTVAS. 25.
 VERĀNTAS. (Allah.) No. 25. MADHUS. in Ind. St. 1, 23, 17. SARVADARĠANAS.
 147, 17. 151, 13. VARĀH. BRH. S. 69, 9. 14. BRH. 2, 7. सत्त्वोद्देशे SĀH. D. 34.
 BHĀG. P. 1, 2, 19. 23. 25. 3, 3. 4, 30, 42. MUIR, ST. 1, 19. fg. 23. 28. fg. 33.
 — 5) n. geistiges Wesen, Geist; = चित्त H. an. MED. = अन्नःकरण VAIĠ.
 प्रुद्ध° MUND. UP. 3, 2, 6. °प्रुद्धि JĀĠN. 3, 159. NILAK. 22. °पुरुषान्यता 25. fg.
 ÇIÇ. 4, 55 (= प्रकृति MALLIN.). Verz. d. Oxf. H. 231, a, 8. b, 27. 232, a, 17.
 fg. SARVADARĠANAS. 167, 11. BHĀG. P. 1, 10, 23. 7, 15, 41. निर्वृते ब्रह्म-
 ह्याभ्यां द्वे त्रिषाङ्गिकासाङ्गिके AK. 1, 1, 7, 16. H. 283. SĀH. D. 164. fg. मूढ°
 adj. MBH. 3, 15710. — 6) n. Lebensathem; = अयु, प्राण AK. 3, 4, 27,
 215. H. an. MED. VAIĠ. तेन शब्देन मरुसा समुद्रे पर्वतोपमाः । आश्रयन्त
 गतैः सत्त्वैर्मात्स्याः शतमरुत्प्रशः ॥ MBH. 3, 12098 (= बुद्धिभिः NILAK.). उद्ग-
 तानीव सत्त्वानि R. 2, 48, 1 (48, 1 GORR.). परिकल्पितसत्त्वयोग adj. ÇĀK. 42.
 गत° adj. MBH. 3, 2683. 15798. R. 2, 60, 1. 4, 9, 81. — 7) n. ein reales
 Wesen, Gegenstand, Ding; = इव्य, वस्तु AK. TRIK. 3, 2, 8. 21. H. an.
 MED. VAIĠ. सत्त्वप्रधानानि नामानि NIR. 1, 1. 12. 20. 2, 7. 15. 7, 4. 9, 1. RV.
 PRĀT. 12, 5. 8. AV. PRĀT. S. 261. P. 1, 4, 57. 2, 3, 33. II, S. 451 unter
 गुण. °गामिन् AK. 1, 1, 1, 63. — 8) m. n. ein lebendes Wesen, insbes.
 ein unvernünftiges AK. 3, 4, 27, 215. H. 1366. H. an. MED. HALĀJ. 5, 82.
 3, 34. VAIĠ. अस्थिमत् M. 11, 140. अन्नाद्यन्न, रसज 143. हिंस्र 12, 56. JĀĠN.
 3, 275. MBH. 1, 1135. रात्रिचारिन्, दिवाचारिन् 10, 26. fg. सत्त्वेः सत्त्वा हि
 शीवन्ति दुर्बलैर्बलवतराः 12, 443. 4258. स्त्री वा पुमान्वा यच्चान्यत्सत्त्वं न-
 गर्राष्ट्रजम् R. 1, 9, 21. 40, 20. 2, 25, 18. औदकानि 33, 13 (15 GORR.). 55, 7.
 R. GORR. 1, 43, 2. 3, 55, 48. 64, 21. 4, 1, 15. 5, 14, 62. 7, 4, 9, 10. ĠAIM. 1, 9.
 SUÇR. 1, 114, 7. 2, 399, 18. 538, 12. 15. 18. 495, 20. KĀM. NĪTIS. 15, 9. KU-
 MĀRAS. 3, 17. RAGH. 2, 8. 14. 38. 6, 46. 14, 75. 15, 15. ÇĀK. 38. 192. 17, 20.
 93, 5. Spr. (II) 3753. 4424. 4526. 4929. 5609. 6263. VARĀH. BRH. S. 5, 54.
 21, 23. 32, 1. 23. 33. 5. 91, 2. °युद्ध 43, 28. KATHĀS. 12, 44. 18, 389 (an bei-
 den Stellen doppelsinnig). 60, 22. 92. RĀĠA-TAR. 1, 133 (°हिंसा mit der
 ed. Calc. zu lesen). 3, 4. SĀH. D. 38, 10. BRAHMA-P. in LA. (III) 48, 12.
 BHĀG. P. 1, 15, 14. 3, 13, 21. 26, 18. 5, 9, 21. PAÑĀT. 69, 5. 165, 9. HIT. 56,
 20. BURNOUF, Intr. 593. — 9) m. n. ein gespenstisches Wesen, ein böser
 Geist, Kobold; = पिशाचिद H. an. MED. VAIĠ. = गन्धर्व AK. 3, 4, 27,
 135. सत्त्वास्तु नारकाः 1, 2, 2, 2. रत्नोपनादिसत्त्वानां दर्शनम् VARĀH. BRH. S.
 46, 92. सत्त्वमाविश्य R. 2, 33, 10. सत्त्वेनाविष्टचेतनः R. GORR. 2, 33, 11. fg.
 KATHĀS. 44, 159. — 10) m. N. pr. eines der Söhne des Dhṛtarāshṭra
 MBH. 1, 4543. — ÇKDa. führt noch folgende Bedd. an: रस, अयुस् nach
 DHAR. कुबेर angeblich nach H. धन nach ÇABDAB. — Vgl. अ°, अन्नः°,
 आपन्न° (auch SUÇR. 2, 491, 6), उः°, देव°, निः°, बोधि°, भीरु°, मरुा°,
 यावत्°, वज्र°, स°, सु°, साङ्गिक.
 सत्त्वक (von सत्त्व) m. N. pr. eines Mannes; s. साङ्गिक.
 सत्त्वकर्तार m. Schöpfer der lebenden Wesen so v. a. प्रजापति R. 7, 4, 10.
 सत्त्वधामन् n. die Heimath der Qualität Sattva, Bein. Viśhṇu's BHĀG.